

एस एम 5 – तसर खाद्य पौधों के लिए द्वितीयक पोषक तत्वों का मिश्रण

तसर रेशम की उत्पादकता बढ़ाने में सहायक



केन्द्रीय तसर अनुसंधान व प्रशिक्षण संस्थान
केन्द्रीय रेशम बोर्ड

(वस्त्र मंत्रालय : भारत सरकार)

पिस्का नगड़ी, राँची - 835 303, झारखण्ड

एसएम5

एसएम5 में द्वितीयक पोषक तत्व कैल्शियम, मैग्नीशियम एवं सल्फर रहता है जिसके प्रयोग से तसर खाद्य पौधों की पत्तियों के पैदावार एवं गुणवत्ता में वृद्धि होती है। इससे तसर रेशम की उत्पादकता बढ़ती है।

एसएम5 के घटक कैल्शियम से अच्छी जड़ पद्धति विकसित होती है जो पोषक तत्वों के अर्न्तग्रहण में सहायक होती है। इसके अलावा कैल्शियम, नाइट्रोजन का नाइट्रेट के रूप में अवशोषण में सहायता करता है जिससे प्रोटीन संश्लेषण में वृद्धि होती है। यह कोशिका विभाजन में भी आवश्यक भूमिका निभाता है।

एसएम5 कार्बनडाइऑक्साइड के स्थिरीकरण में सहायक है एवं इसके प्रयोग से प्रकाश संश्लेषण की क्रिया में वृद्धि होती है। परिणामस्वरूप पत्तियों में कार्बोहाइड्रेट की मात्रा बढ़ जाती है। यह एक सहकारक एवं एन्जाइम का उत्प्रेरक है। क्लोरोफिल के बनने तथा एन्जाइम के सक्रियण में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

एसएम5 में मौजूद सल्फर, एमिनो एसिड एवं प्रोटीन का घटक है जो सभी प्रकार की फसलों की वृद्धि में सहायक होता है। इसके प्रयोग से प्रोटीन की मात्रा बढ़ जाती है जिसका अनुकूल प्रभाव तसर रेशम कीटों के स्वास्थ्य पर पड़ता है। अंततः उत्तम कोटि के तसर कोसे प्राप्त होते हैं।

पोषक तत्वों के अवशोषण पर प्रभाव :

एसएम5 में कैल्शियम कार्बोनेट/बुझा चूना



SM5 उपचारित खाद्य पौधा



अनुपचारित खाद्य पौधा

होता है जो तसर बगानों की मृदा जो अधिकांशतः आम्लीय होती है, के पी.एच. का स्तर बढ़ाकर उसे उदासीन बनाता है जिससे मृदा में पोषक तत्वों की उपलब्धता बढ़ जाती है और उनका अवशोषण सहज हो जाता है।



SM5 की प्रयोग विधि

पैदावार पर प्रभाव :

1) **पर्ण उपज में वृद्धि** : एसएम5 उपचारित पौधों की पत्तियों की पैदावार में मानक की तुलना में औसतन 27.45% की वृद्धि होती है।

2) **कीटपालन क्षमता में वृद्धि** : एसएम5 उपचारित पौधों की पत्तियों की पैदावार में वृद्धि के फलस्वरूप प्रति हेक्टेयर 110 अतिरिक्त रोगमुक्त चक्कतों का पालन किया जा सकता है।

3) **गुणवत्ता पर प्रभाव** : एसएम5 के प्रयोग से पत्तियां सरस हो जाती हैं तथा उनमें कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन एवं खनिज की मात्रा बढ़ जाती है जिसका अनुकूल प्रभाव रेशम कीट के स्वास्थ्य और

उत्तरजीविता पर पड़ता है। फलतः कोसों की उत्पादकता एवं गुणवत्ता में भी बढ़ोत्तरी होती है।

प्रयोग की विधि एवं समय :

एस.एम5 के दो घटक होते हैं।

घटक ए (कैल्सियम कार्बोनेट / बुझा चूना) :

खुराक - 45 ग्राम / पौधों की दर से
आधारिक प्रयोग, खाद्य पौधों के चारों तरफ थाले
बनाकर मानसून आने पर नम मिट्टी में करें।

घटक बी (मैगनीशियम सल्फेट) :

पर्णाय छिड़काव तीन बराबर विखंडित खुराकों
में 15 दिनों के अंतराल पर नई पत्तियों के पूरी तरह
आने पर करें (मई-जून)।

पर्णाय छिड़काव हेतु प्रत्येक बार 100 ग्राम
मैगनीशियम सल्फेट को 15 लीटर जल में घुलावें
(कुल 300 ग्राम / 100 पौधे या 20 किग्रा /
हेक्टेयर)।

सावधानियाँ :

- छिड़काव साफ मौसम में किया जाना चाहिए।
- पर्णाय छिड़काव प्रातः काल या संध्या में किया
जाना चाहिए।

इस तकनीक का दूरगामी महत्व है। कीटपालन
क्षमता में वृद्धि से उत्पादन के साथ उत्पादकता में
भी वृद्धि होती है।

यह उपचार अनुशंसित संवर्धन - प्रक्रिया /
उर्वरक / खाद के अतिरिक्त है।



अनुपचारित कोसे

उपचारित कोसे

विशेष जानकारी के लिए सम्पर्क करें

निदेशक

केन्द्रीय तसर अनुसंधान व प्रशिक्षण संस्थान

केन्द्रीय रेशम बोर्ड

(वस्त्र मंत्रालय : भारत सरकार)

पिस्का नगड़ी, राँची - 835 303

झारखण्ड

दूरभाष : 0651-2775815

फैक्स : 0651-2775629

ई-मेल : ctrticsb@gmail.com

तकनीकी योगदान

सुस्मिता दास

वैज्ञानिक - सी

परियोजना प्रबोधन एवं मूल्यांकन कक्ष